ओ३म्

अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्तु
- हमारे वीर विजयी हों

वर्ष : 30, अंक 7, 25 सितम्बर–अक्टूबर, 2015 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि संवत् 1,96,0853,112

आर्य वीर विजय

अमर शहीद पं. लेखराम स्मृति मासिक पत्रिका

सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरियाणा ● 10 वर्षीय शुल्क 700 रु. ● वार्षिक शुल्क 70 रु. ● यह अंक 10 रु.

महर्षि दयानन्द सरस्वती

हरियाणा-दिल्ली-पंजाब-उत्तर प्रदेश-उत्तरांचल-राजस्थान-मध्यप्रदेश-गुजरात-महाराष्ट्र-हिमाचल प्रदेश

विज्ञापन की दरें (वार्षिक)

अन्तिम पृष्ठ	7000/-	अन्दर के रंगीन पृष्ठ	4000/-
अन्तिम पृष्ठ रंगीन आधा	4000/-	अन्दर का आधा (सादा)	2500/-
अन्तिम अन्दर का रंगीन	6000/-	एक विज्ञापन पट्टी 250/- प्रति पृष्ठ, प्रति अंक	

ऋग्वेद

देव दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

यजुर्वेद

आर्य समाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद

के.एल. महता दयानन्द पब्लिक स्कूल्ज़
के.एल. महता दयानंद महिला महाविद्यालय

देव दयानंद के सच्चे शिष्य बन
शिक्षा का अलख जगाया।
पूर्णाहुति में निज-उत्सर्ग कर
सेवा का धर्म निभाया।
ऋषि के सच्चे पथ पर चलकर
'महात्मा' वह कहलाया॥

महात्मा कन्हैयालाल महता

अथर्ववेद

सामवेद

फूलों का गुलदस्ता

संकलनकर्ता- मनोहर लाल आनन्द, प्रधान सम्पादक

1. सत्पुरुषों को योग्य है कि मुख के सामने दूसरे का दोष कहना और अपना सुनना, परोक्ष में दूसरे के गुण सदा कहना। दुष्टों की यही रीति है कि सम्मुख में गुण कहना और परोक्ष में दोषों का प्रकाश करना।
—स्वामी दयानन्द सरस्वती
2. भिखारी भीख मांगने नहीं आता अपितु सीख देने आता है कि उदार हृदय से दान करो अन्यथा मेरे जैसी दशा होगी।
3. अपने किये हुए पुण्य भूल जाओ। किन्तु किये हुए पापों को याद रखो।
4. पाप करते हुए मन में संकोच हो तोसमझना कि प्रभु की कुछ कृपा हुई है। पाप की माँ ममता है और पिता लोभ। इनका त्याग करो।
5. मुझ में अभिमान नहीं है यह मानना भी अभिमान है।
6. पाप हो, ऐसा कमाओ नहीं, क्लेश हो, ऐसा बोलो नहीं, रोग हो, ऐसा खाओ नहीं। —आचार्य चन्द्रशेखर
7. जिसने तृष्णा जीत ली, उसने अटल स्वर्ग जीत लिया। —महाभारत
8. जो धन का स्वामी है पर इन्द्रियों का नहीं, वह इन्द्रियों को वश में न रखने से धन से भ्रष्ट हो जाता है। —विदुर
9. पाप पहले मजेदार लगता है, फिर वह आसान हो जाता है, फिर हर्ष दायक, फिर वह बार-बार किया जाता है, फिर आदतन किया जाता है, फिर उसकी जड़ जम जाती है, फिर आदमी गुस्ताख हो जाता है। फिर हठी, फिर वह कभी न पछताने वाला बनता और फिर वह तबाह हो जाता है। —लीटन
10. अपनी उन्नति और अवनति जिह्वा के अधीन रहती है। —चाणक्य

आर्य वीर विजय

सम्पादक मण्डल

मनोहर लाल आनन्द
प्रधान सम्पादक

सतीश कौशिक
व्यवस्थापक
☎ : 9312083458

उमेद सिंह शर्मा
संचालक
☎ : 9868956786

देश बंधु आर्य
संरक्षक
☎ : 9811140360

डॉ. (श्रीमती) विमल महता
संरक्षिका
☎ : 9350266601

अजीत कुमार आर्य
संरक्षक
☎ : 09794113456

श्री शिव दत्त आर्य
संरक्षक
☎ : 9810638622

संजीव कुमार मंगला
कानूनी परामर्शदाता
☎ : 9812271456

समस्त अवैतनिक

वक्त सबसे बड़ा होता है

-सुदेश खन्ना

वक्त सबसे बड़ा होता है।
कोई इसके आगे न खड़ा होता है।
यह दे दे तुझे तख्ते ताज कभी,
दाने-दाने को करे मोहताज कभी,
डंडा इसका बहुत कड़ा होता है।
कयामत समझो दर पै खड़ी।
चश्में बद जो इसका पड़ी।
पत्थर हर राह पर अड़ा होता है।
कहर ढाये न यह दुआ करो।
बशर हो न फना इल्तजा करो।
जादू इसका सर चढ़ा होता है।

भारतीय संस्कृति का अर्थ

यदि प्रश्न किया जाये कि भारतीय संस्कृति का अर्थ क्या है? तो उसका उत्तर होगा कमल। कमल कहना है—अनासक्त रहो। प्रकाश की पूजा करो, अमंगल में से मंगल ग्रहण करो। तपस्या करो। केवल सत्कर्म करते रहो। नई-नई बात ग्रहण करते रहो।

सत्य

— ले. राजपाल सिंह शास्त्री

सांच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाके हृदय सांच है, ताके हृदय आप।।

उपरोक्त कथन की सार्थकता में कोई भी सन्देह नहीं। निःसन्देह सत्य के बराबर कोई तप नहीं है। झूठ के बराबर पाप नहीं और जिसके हृदय में सत्य है वहाँ स्वयं भगवान् निवास करते हैं।

सत्य की कितनी बड़ी महिमा है। सत्य ही सच्ची उपासना है, सत्य ही भगवान को प्रसन्न करनेवाला साधन है। यदि हम सत्य को ग्रहण करते हैं तो हम सब कुछ प्राप्त कर लेते हैं। सत्य से हमारी आत्मा का उत्थान और झूठ से पतन होता है। आत्मोन्नति बिना सत्य के असम्भव है। महात्मा गान्धी ने इतनी आत्मोन्नति सत्य के बल से ही प्राप्त की थी। सत्यवादी व्यक्तियों को संसार कभी नहीं भूलता। राजा हरिश्चन्द्र का नाम सत्य-प्रेम के कारण ही आज तक जीवित है। सत्य भाषण से वाणी में पवित्रता आती है। सत्यवादी लोगों के मुख से निकले शब्द पवित्र होते हैं। सत्य से ही चरित्र का निर्माण होता है। सत्य ही हमें प्रतिष्ठा और सुख प्रदान करता है। सत्यवादी संसार में सम्मान पाता है। संसार उसकी बात पर विश्वास करता है। सत्य से सदैव संसार में नाम रहता है। सत्यवादी लोग प्रायः अमरत्व को पा जाते हैं।

झूठ सबसे बड़ा पाप है। झूठ बोलने में आत्मग्लानि होती है, समाज और जनता में असत्यवादी का आदर नहीं होता। उसकी बात में कोई औचित्य नहीं होता। असत्य भाषण से मनुष्य का चरित्र भ्रष्ट हो जाता है। संसार उसे अच्छी दृष्टि से नहीं देखता। सभी उसकी निन्दा करते हैं। इस प्रकार हम अनुमान लगा सकते हैं कि असत्य से पतन है और असत्य मनुष्य को समाज में अपमानित करता है। इतिहास में खोजने पर भी असत्यवादी का नाम न मिलेगा। परन्तु सत्यवादियों के नामों से इतिहास की छटा बढ़ती ही रहती है। राजा हरिश्चन्द्र, दानवीर कर्ण, महाराजा दशरथ, महात्मा गांधी इनके ज्वलन्त उदाहरण है।

बड़े-बूढ़े के प्रति—

1. बड़ो को 'आप' शब्द कहिए।
2. बड़े-बूढ़ों को सदा सम्मान कीजिए। उनके बराबर मत बैठिए।
3. विद्वान्, साधु-महात्मा और पण्डित का सत्कार करना उचित है।
4. बड़ों के सामने उपदेश पूर्ण शब्द मत बोलिये।
5. यदि कोई आपका पूज्य व्यक्ति आपके कमरे में प्रवेश करे तो उठ खड़े होइये और अभिवादन के पश्चात् बैठने का सर्वोत्तम स्थान उन्हें दीजिए।
6. प्रणाम चिल्लाकर मत करो। सामने होकर नम्रतापूर्वक प्रणाम करो।
7. कोई बड़ा बुलाये तो क्या, ऐ, हां मत कहो। जी, हां जी, जी कहो।
8. अपने से बड़ों की ओर, जहाँ तक हो सके, पीठ करके मत बैठिए।
9. द्वार के भीतर जाते समय पहले बड़ों को जाने दीजिए। द्वार बन्द हों, तो आगे बढ़कर खोल दीजिए।
10. मेज पर झुककर बात मत करिए। खड़ा रहना हो तो सीधे खड़े रहिए। कमर झुककाकर भी बैठना नहीं चाहिए। ●

भक्त फूल सिंह जी का बलिदान दिवस

भक्त फूल सिंह स्मारक समिति 'माहरा जिला सोनीपत' द्वारा भक्त जी का 74 बलिदान दिवस बड़े उत्साह से माहरा में मनाया गया। तीन दिन सामवेद परायण यज्ञ किया गया। मुख्य प्रोग्राम 16 अगस्त को था, जिसकी अध्यक्षता आचार्य बलदेव जी ने की। मुख्य वक्ता आचार्य सोमदेव जी (ऋषि उद्यान अजमेर) से पधारे थे।

योग साधना शिविर

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

दिनांक : 25 अक्टूबर से 01 नवम्बर, 2015

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान-विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग-साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

1. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
2. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
3. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
4. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
5. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
6. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
7. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
8. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
9. किसी भी मादक द्रव्य, चाय-कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
10. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
11. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ—मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज0) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क 1000 से 2000 रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं। शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न

लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क 1000 रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति सेपूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : 014572460964
email : psabhaa@gmail.com

मार्ग : ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहँचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेटॅफव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

- संयोजक

चिंता छोड़ो, चिंतन करो!

"महानुभाव, आत्महितार्थ मुमुक्षु, धर्मानुरागी जनों को न्तिय इस प्रकार का सम्यक् चिन्तन व मनन करना चाहिए, जिससे उसकी बुद्धि श्रेयोमार्ग, उन्नति के मार्ग में ही गतिशील रहे। मैं कौन हूँ? मैं कैसा हूँ? मेरी आत्मा में किस-किस प्रकार के गुण विद्यमान हैं? कितने गुण प्रकट कर लिये और मुझे कितने गुण प्रकट करना बाकी हैं। मैं कहाँ हूँ? कहाँ से आया हूँ, कहाँ जाना है? अपने स्वभाव को कैसे प्राप्त करूँ? मेरे लिए प्राप्य, उपादेय व सेवनीय क्या है? उसकी प्राप्ति कैसे व किस निमित्त से होगी, यदि ऐसा नहीं किया तो मति अधः पतन की ओर स्वभावतः गतिशील हो जायेगी। ये चार पंक्तियाँ भी गुन-गुनाने व चिंतन करने के योग्य हैं।

हम चले देवता कहलाने, पर मानव भी कहला न सके।
हम चले विश्व विजयी बनने, पर विजय स्वयं पर पा न सके।।
हम चाहते हैं बस कैसे भी जल्दी से भगवान बनें।
किन्तु नहीं चाहते हम कि इससे पहले इंसान बने।।

रेत के घरौंदे

ले. रविचन्द्र गुप्ता

असम प्रान्त के तेजपुर से लगभग 18 किलोमीटर दूर स्थित ढोकाईजुली गाँव। संध्या का समय, आकाश में घुमड़ते बादल। थोड़ी देर पहले हल्की-सी बौछार से मनोरम हो चुके मौसम का बच्चे भरपूर आनन्द ले रहे हैं। एक ग्यारह वर्षीया बालिका फुलेश्वरी अपनी एक सहेली के साथ घर के बाहर मैदान में रेत के ढेर पर खेल रही है। दोनों ने रेत के कई छोटे-छोटे घरौंदे बना दिये हैं। बीचों-बीच एक बड़ा घरौंदा बनाकर चारों ओर रेत की दीवार उठा कर एक घेरा-सा बना दिया है।

"हम एक खेल खेलेंगे", फुलेश्वरी अपनी सहेली से कहती है—"तू यहीं ठहर। कोई उन्हें खराब न कर दे। मैं घर से एक चीज लेकर अभी आती हूँ।"

कुछ ही देर में वह एक नीले कपड़े का टुकड़ा, एक झाड़ू की सींक में पिरोकर ले आयी और छोटी-सी झंडी बना कर उसे बड़े घरौंदे पर लगा दिया। इस बीच आसपास खेल रही कुछ अन्य बालिकाएँ भी वहीं आ गईं।

"देखो, सब लड़कियाँ खेल को समझ लें" फुलेश्वरी सहजात नेता के अंदाज में बोली—"यह अंग्रेजों की छावनी है। ऊपर यूनियन जैक (ब्रिटेन का झंडा) लगा है। तुममें से आधी लड़कियाँ दीवार के अन्दर रहकर अंग्रेजों की सेना बनकर अपनी छावनी बचाने का अभिनय करो। आधी लड़कियों के दल के साथ मैं इस छावनी पर आक्रमण करूँगी।"

कुछ बालिकाएँ अंग्रेज सैनिकों की तरह अकड़ कर चलती हुई घरौंदों के आगे डट गयीं और फुलेश्वरी अपने दल के साथ दूर से "इन्कलाब-जिंदाबाद", "भारत माता की जय" के नारे लगाती हुई आगे बढ़ी। अंग्रेज छावनी पर हमला बोल दिया गया। अंग्रेज सैनिक बनी बालिकाओं ने उन्हें रोकने का नाटक किया, पर फुलेश्वरी ने तेजी से आगे बढ़ कर छावनी को ध्वस्त कर दिया और नीले झंडे को फाड़ कर फेंक दिया।

बच्चों का यह नाटक उस क्षेत्र में घटी एक घटना के प्रतिकार का अभ्यास था। असम के आदिवासी क्षेत्रों में शंभुधन फुंगलो की छावनी को कभी अंग्रेजों ने नष्ट किया था। अंग्रेजों के अत्याचारों और छावनियों को नष्ट करने की कहानी फुलेश्वरी ने इलाके के बूड़े-बूढ़ों से सुनी थी। तभी से उसके हृदय में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध गहरे रोष का बीज उग कर इस प्रकार के खेलों के रूप में अंकुरित हो जाता था। यही अंकुर अगस्त, 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में एक वृक्ष का रूप लेने लगा। महात्मा गांधी ने भारत की जनता को ललकार कर कहा था-"करो या मरो।" देश भर में सरकारी इमारतों पर लगे यूनियन जैक को हटा कर, उसकी जगह तिरंगा लहराने की होड़-सी लग गई। फुलेश्वरी का हृदय भी ढोकाईजुली के थाने पर तिरंगा लहराने को मचलने लगा। उसने घर में ही भगवे, सफेद और हरे कपड़े के बराबर टुकड़े हाथ से सीं कर छोटा-सा तिरंगा ध्वज तैयार किया। बीच में कोयले से आड़ी-टेढ़ी रेखाएँ खींचकर चरखा भी बना दिया। फिर उसने अपनी सहेलियों को एकत्र किया और उस छोटी-सी टोली का नेतृत्व करती हुई वह सड़क पर निकल पड़ी। गाँव के कुछ अन्य युवा भी उस जुलूस में मिल गये। देखते ही देखते जुलूस ने विशाल रूप धारण कर लिया, जिसमें सबसे आगे छात्राओं की टोली थी। जुलूस जैसे ही थाने पर पहुँचा पुलिस दल ने उसे रोक लिया। फुलेश्वरी ने ललकार कर कहा—"हम पुलिस स्टेशन पर झंडा फहराने आये हैं, और झंडा फहरा कर ही वापस जायेंगे।"

पुलिस अधिकारियों ने बच्चों और युवाओं को समझाने का प्रयत्न किया कि वह वापस अपने घर चले जायें वरना गोली चला दी जायेगी। पुलिस की बातों को अनसुना करते हुए यह टोली बलपूर्वक थाने की ओर बढ़ने का प्रयत्न करने लगी। पहले तो पुलिस ने लाठियों को आड़ बनाकर उन्हें रोकने का प्रयत्न किया, किन्तु जुलूस फिर भी न रुका तो पुलिस ने गोलियाँ चलानी आरम्भ कर दीं। सबसे पहली गोली फुलेश्वरी को लगी। फिर तो एक-एक कर लाशें गिरती रहीं। कुछ ही क्षणों में थाने के सामने बीस किशोर और युवा बालक-बालिकाओं की लाशें जमीन चूमने लगीं। गोलियों की आवाज़ सुन कर फौजी टुकड़ी भी आ पहुँची। थाने से कुछ दूर एक स्थानीय मेला लगा

हुआ था। फौजी टुकड़ी ने मेले में पहुँचकर वहाँ भी खूब मारधाड़ मचाई। पंद्रहबीस लोग यहाँ भी अंग्रेजी क्रूरता का शिकार हो गये।

यह समाचार जंगल की आग की तरह पूरे इलाके में फैल गया। जगह-'जगह उसकी पुनरावृत्ति होने लगी। फुलेश्वरी का रेत के घरौंदे वाला नाटक सच होने लगा और अंत में विदेशी शासन रेत के घरौंदे के समान ही टूट कर बिखर गया। ●

यौवन के सपने

ले. रविचन्द्र गुप्ता

बंगाल में त्रिपुरा का जिला हैडक्वार्टर-कोमिल्ला। कोमिल्ला के फैजन्नुसा गर्ल्स हाई स्कूल में प्रधानाचार्या श्रीमती कल्याणी देवी का कार्यालय। प्रधानाचार्या आठवीं कक्षा की दो छात्राओं से गुप्त वार्ता में व्यस्त हैं—"आज जिला मजिस्ट्रेट स्टीवेंस के अत्याचारों से लोग थर-थर काँप रहे हैं। सायंकाल सात बजे के बाद लोगों को घर से निकलने की मनाही है। सोलह वर्ष से ऊपर के सभी लोगों के परिचय-पत्र बनवा दिये गए हैं। भय के कारण लोग घरों से निकलने से कतराते हैं। गाँवों में खाने-पीने की चीजों का अभाव हो गया है। लोगों का व्यापार ठप्प होता जा रहा है। गाँवों और शहरों में चप्पे-चप्पे पर पुलिस का पहरा है। स्कूलों व सरकारी भवनों में पुलिस की मौजूदगी भय और आतंक को और बढ़ावा दे रही है।"

शांति घोष ने प्रधानाचार्या की बातों को ध्यान से सुनने के बाद प्रश्न किया—"दीदी! आप हमें सिर्फ यह बताइये कि इस आतंक को मिटाने के लिये हमें क्या करना है?"

"इस आतंक को मिटाने के लिये स्टीवेंस को खत्म करना होगा। लेकिन उसकी सुरक्षा व्यवस्था बहुत कड़ी कर दी गई है। उसे सेना के सुरक्षा कवच में रखा गया है। उसके बंगले के चारों ओर कँटीले तारों की दो ऊँची बाड़ें लगा दी गई हैं। वही उसका घर है और वही उसका कार्यालय। किसी भी समारोह में जाने की उसको मनाही है। किसी को भी उसके बंगले में जाने पर कड़ी छान-बीन की जाती है। उसकी दशा किसी नज़रबंद कैदी से कम नहीं है। उसे मारने के लिये कई क्रान्तिकारी-संगठनों ने सरकार को धमकी भरे पत्र भेजे हैं लेकिन कोई भी उसे मारने की हिम्मत नहीं जुटा सका है।"

"उसको हम ठिकाने लगाएँगी। ऐसे सुरक्षा कवचों को भेदना हमें आता है। अभिमन्यु की भाँति हम सुरक्षा कवच को तोड़कर अन्दर घुसेंगी और उस आततायी को समाप्त करके ही दम लेंगी।"

"शाबास बच्चो! लेकिन इस कार्य में तुम्हारी जान. ..."

"बस दीदी! हमारी जान की परवाह न कीजिये। हम महाभारत के अभिमन्यु की संतान है। अभेद्य चक्रव्यूह में प्रवेश करके शत्रु का नाश करते हुए हमारी जान भी चली जाती है तो यह हमारे लिये गौरव की बात होगी।"

"वाह! मेरे बच्चो! और यह इस विद्यालय के लिये भी बड़े गौरव की बात होगी। मैं स्वयं तुम्हें स्टीवेंस के बँगले तक छोड़ कर आऊँगी।"

विद्यालय की यह प्रधानाचार्या सुभाष चन्द्र बोस के गुरु वेणीमाधव दास की बड़ी पुत्री कल्याणी देवी थीं। कल्याणी की छोटी बहन वीणा दास भी बंगाल के गवर्नर स्टेनली जैक्सन की हत्या के प्रयास में 13 वर्ष का कारावास भोग रही थी। कल्याणी देवी भी विद्यालय की छात्राओं में आजादी के लिये मर मिटने के संस्कार पैदा कर रही थीं।

14 दिसम्बर, 1931 का प्रातःकाल। शांति घोष और सुनीति चौधरी दोनों स्कूली पोशाक में स्टीवेंस के बँगले पर पहुँच गई। गेट पर संतरी ने टोका। शांति घोष बोली—"हमारे विद्यालय की ओर से छात्राओं की तीन मील की तैराकी प्रतियोगिता है। इसमें हम जिलाधिकारी महोदय की सहायता चाहती हैं।"

"क्या सहायता चाहिये?", संतरी ने प्रश्न किया।

"उस दिन नदी में एक निश्चित समय तक तीन मील के क्षेत्र में मोटर बोट, स्टीमर, नाव आदि के आने-जाने पर रोक लगा दी जाय जिससे कि प्रतियोगिता में कोई रुकावट पैदा न हो।"

शांति घोष ने ऐसा कहते हुए जेब से प्रार्थना-पत्र

निकाला और संतरी को थमा दिया। संतरी ने अन्दर कार्यालय से सम्पर्क किया और बताया कि दो स्कूली छात्राएँ हैं। नाबालिग हैं और कार्य भी महत्वपूर्ण है। अतः उन्हें अन्दर जाने की आज्ञा मिल गई। नाबालिग छात्राएँ होने के कारण तलाशी भी कोई खास नहीं हुई। दोनो छात्राएँ जिलाधिकारी के अभेद्य किले को भेदती हुई दनदनाती अन्दर चली गईं। साहब के कमरे के आगे एक छोटा-सा कक्ष था जिसमें साहब के सहायक कर्मचारी बैठे हुए थे। यहाँ भी अपनी बातों से अधिकारियों में विश्वास पैदा कर लिया। एक पर्चे पर दोनों ने अपने असली नाम न लिख कर 'इला सेन' और 'मीरा देवी' छद्म नाम लिखे और पर्चा अन्दर भेजद दिया। थोड़ी ही देर में अन्दर से बुलावा आ गया।

दोनों छात्राओं ने जिला मजिस्ट्रेट के कार्यालय में प्रवेश किया। जाते ही उन्होंने प्रार्थना-पत्र साहब के सामने पेश कर दिया। साहब ने उसे पढ़ा और बोले—"प्रार्थना-पत्र विद्यालय की प्रधानाचार्या द्वारा 'फारवर्ड' होना आवश्यक है। तभी आपकी प्रार्थना को स्वीकार किया जा सकता है।"

इतनी ही देर में शांति घोष खुजली के बहाने अपना एक हाथ काँख में छिपे रिवाल्वर तक ले जा चुकी थी। स्टीवेंस ने जैसे ही कलम उठा कर प्रार्थना-पत्र पर 'प्रधानाचार्या कृपया अपना अभिमत दें' लिखा शांति घोष ने गोलियाँ चला दीं।

गोलियों की आवाज़ सुनते ही अधिकारी लोग अन्दर घुसे तो उन्होंने देखा की साहब का शव खून से लथपथ कुर्सी के एक ओर लुढ़का पड़ा है और दोनों छात्राएँ अपनी सफलता पर मुस्करा रही हैं।

चौदह और साढ़े चौदह वर्ष की दोनों छात्राओं के कारनामों से सारे भारत में तहलका मच गया। कम उम्र होने के कारण उन्हें फाँसी की सजा न देकर आजन्म कारावास की सजा दी गई। देश की खातिर इन बालिकाओं के शैशव की चहचहाहट और यौवन के सपने अंडमान जेल की अंधेरी कोठरियों में ही दफन होकर रह गए।●

Arya Public School

Near 100 Ft. Road, Sec.-55, Jeevan Nagar, Faridabad

The School : Neat & Clean Campus, Educated and dedicated Promotors, Transport Facility from nearby areas, Permanently recognised and affliated to Haryana Board, Special emphasis on Spoken English, Ultra modern teaching aids, including projectors, Library with all relevant material.

Director
Sanjay Arya
9212307856

Principal
Rajni Arya
9212307852

पिता-पुत्र-संघर्ष

ले. मुरारी लाल शर्मा

हिम्मत से काम लेते हैं जो इम्तहाँ के वक्त।
उनकी मदद पै कहते हैं परमात्मा रहे।। —हमदम

महाद्वीप एशिया के उत्तर-पश्चिम के देश फारस में रुस्तम नाम का एक बड़ा ही साहसी, वीर और पराक्रमी योद्धा हो गया है। उसके देशवासी उसे 'फारस की ढाल' के नाम से पुकारते थे, क्योंकि उसके रहते किसी का इतना साहस न था कि किसी निर्बल पर तनिक भी अत्याचार कर सके। रणक्षेत्र में रुस्तम की हुंकार सुनके बड़े-बड़े वीरों को छक्के छूट जाते, सेनाएँ खेत छोड़के भाग निकलतीं। रुस्तम ने अपनी सवारी के लिए पीले रंग का एक बड़ा ही तेज़ और फुर्तीला राकुश नाम का घोड़ा पाल रक्खा था। रुस्तम इस घोड़े को प्राणों से भी अधिक प्यार करता था।

एक बार रुस्तम शिकार खेलता हुआ तुर्किस्तान के एक राज्य में जा निकला। वहाँ के राजकुमार ने बड़े समारोह से रुस्तम का स्वागत किया और इस वीर से अपनी बहिन तनीमा का विवाह कर दिया। कुछ दिन तक तो रुस्तम अपने ससुर के घर रहा, परन्तु जब शत्रुओं ने फारस पर आक्रमण किया तो वह अपने देशवासियों का निमंत्रण पाते ही तत्काल अपनी जन्मभूमि को लौट आया।

विदा होते समय रुस्तम ने अपनी स्त्री को एक मणि देकर कहा—"प्रिये! यदि पुत्र उत्पन्न हुआ तो यह मणि उसे बाँध देना, मगर इस विवाह की चर्चा किसी से भी न करना!" इस प्रकार से तनीमा को समझा-बुझाकर रुस्तम निश्चिन्त हो शत्रुओं से दो-दो हाथ करने के लिए फारस में आया।

सौभाग्यवश तनीमा की कोख से पुत्र ही उत्पन्न हुआ। माता ने पुत्र का नाम सोहराब रक्खा। बालक सोहराब बड़ा ही सुन्दर, हँसमुख और चपल था। तनीमा भली-भाँति जानतीथी कि यदि रुस्तम को सोहराम के जन्म की सूचना मिल गई तो वह इसे भी अपने पास बुलाकर अपने-जैसा ही वीर बनाएगा। तब मेरा पुत्र मेरे पास न रह पाएगा। अतः मोह में फँसकर तनीमा ने अपने पति से कहला भेजा कि आपके घर कन्या ने जन्म लिया है।

सोहराब ज्यों-ज्यों बड़ा होने लगा, उसके चित्त में अपने पिता का नाम जानने की उत्कट इच्छा होने लगी। खेलते समय सोहराब के साथ बालक उसे 'बिना बाप का' कहकर चिढ़ाते। इससे सोहराब ने अपनी माँ को पिता का नाम बताने के लिए और भी अधिक तंग किया। तनीमा बहुत दिन तक सोहराब को बहकाती रही, परन्तु एक दिन सोहराब ने बहुत आग्रह करने पर उसने कह दिया—"सोहराब, तुम्हारे पिता जी का नाम रुस्तम है।"

माता के मुख से ये शब्द सुनते ही बालक का मुखमण्डल खिल उठा। वह उसी समय अपने पिता जैसा वीर बनने की भरसक चेष्टा करने लगा। युद्ध विद्या में सब प्रकार से कुशल होने के पश्चात् वह एक बड़ी भारी सेना साथ ले, पिता से भेंट करने के लिए फारस को रवाना हुआ।

मार्ग में सोहराब को मालूम हुआ कि फारस का बादशाह कैकाऊस बड़ा ही नीच है। इसलिये सोहराब ने कैकाऊस को गद्दी से उतारकर अपने पिता को फारस का बादशाह बनाने का दृढ़ निश्चय कर लिया। सोहराब को एक बड़ी भारी सेना-समेत आते देख कैकाऊस ने भी उसे परास्त करने के लिए असंख्य सेना भेजी। परंतु सोहराब की वीर सेना के सम्मुख कैकाऊस की सेना के पैर उखड़ गए और भाग चली। सब ओर से निराश हो अंत में कैकाऊस ने रुस्तम से प्रार्थना की कि वह सोहराब से लड़े।

रुस्तम-सा प्रसिद्ध योद्धा पहले तो सोहराब-जैसे बालक के साथ लड़ने को राजी न हुआ, परन्तु बहुत-कुछ कहने-सुनने पर वह इस शर्त पर लड़ने को तैयार हुआ कि रुस्तम का नाम न बताया जाए। रुस्तम भेष बदलकर सोहराब से लड़ने पहुँचा। रणक्षेत्र में सोहराब ने रुस्तम से पूछा—"तू कौन है? क्या तू रुस्तम है?"

रुस्तम ने कहा—"भला रुस्तम तुझ-जैसे छोकरे से

क्यों लड़ेगा?"

सोहराब ने उत्तर दिया—"मैं तो केवल एक बार रुस्तम से भेंट करना चाहता हूँ।"

रुस्तम ने पूछा—"सो क्यों?"

सोहराब ने अपना भेद छिपाने के लिए कहा—"केवल उसे मारने के लिए।" यह कहकर दोनों वीरों ने अपनी-अपनी तलवारें खींचकर लड़ना प्रारंभ कर दिया। फौजें अलग खड़ी हुई ताकती रहीं।

जब लड़ते लड़ते शाम हो गई तो दोनों ही वीर अपने शिविर मे विश्राम करने के लिए चले गए।

सोहराब ने अपने उस्ताद से कहा—"हो न हो, मेरे साथ आज युद्ध करनेवाला वीर रुस्तम ही है।"

उस्ताद ने उत्तर दिया—"सोहराब! ऐसा नहीं हो सकता। मैं रुस्तम को भली-भाँति पहचानता हूँ।"

दूसरे दिन के युद्ध में भी कोई न हारा। तीसरे दिन लड़ते समय सोहराब ने रुस्तम से कहा—"तू अवश्य रुस्तम है, क्योंकि मुझसे कोई भी योद्धा दो दिन से अधिक नहीं लड़ सकता।"

रुस्तम ने झिड़ककर उत्तर दिया—"रुस्तम-सा वीर तुझ जैसे बालक से युद्ध करने में अपनी मानहानि समझता है। मैं रुस्तम नहीं।"

युद्ध प्रारंभ हो गया। इस बार सोहराब ने रुस्तम के छक्के छुड़ा दिये। रुस्तम ने भी क्रोध के आवेश में सोहराब को नीचे गिरा उसकी छाती में तलवार भोंक दी।

रुस्तम क्रोध में दाँत पीस, नेत्र लाल कर, अपना नाम रुस्तम लेकर सोहराब पर झपटा था। रुस्तम का नाम सुनते ही सोहराब ने हाथ से तलवार छोड़ दी थी, परंतु क्रोध में अंधे रुस्तम ने इसका कुछ भी विचार न किया। घायल सोहराब ने रुस्तम बोला—"नादान बालक! क्या इसी बूते पर फारस के वीरों से लड़ने आया था?"

सोहराब नेद कड़ककर उत्तर दिया—"वीरवर! मैंने कान में रुस्तम के पवित्र नाम की ध्वनि पड़ते ही हाथ से तलवार छोड़ दी थी। अधिक डींग न मारिए, मैं युद्ध में आपके दाँत भली-भाँति खट्टे कर सकता था। जो हुआ सो हुआ, परन्तु मेरा पिता रुस्तम तुझसे तेरी इस बेईमानी का बदला अवश्य लेगा!"

रुस्तम बोला—"तू झूठ बोलता है। रुस्तम के तो पुत्र है ही नहीं, उसके तो केवल एक लड़की है।"

इस पर सोहराब ने अपनी भुजा पर बँधी हुई मणि (तावीज) की ओर संकेत किया। रुस्तम ने अपनी दी हुई मणि पहचान ली। फिर तो रुस्तम ने शोक से विह्वल हो, सोहराब को छाती से लिपटा लिया।

पितृ भक्त सोहराब ने पूज्य पिता जी के श्रीचरणों को चूमा।

रुस्तम आत्म-हत्या करने पर उतारू हो गया, परंतु सोहराब ने उससे प्रार्थना की—"पिता जी! इस अन्तिम समय मुझे पितृशोक से और अधिक व्याकुल न कीजिए!" श्रीचरणों में प्रणाम कह कर वीर बालक सोहराब सदा के लिए इस असार संसार से विदा हो गया।

वीर पिता रुस्तम और उसके वीर पुत्र सोहराब का संघर्ष कैसा अलौकिक, अनुपम और रोमांचकारी है! पिता-पुत्र के आदर्श सम्बन्ध का इससे अधिक उज्ज्वल उदाहरण कदाचित ही कहीं मिले। ●

कविता

(लेखक - मैथली शरण गुप्त)

हे आर्य सन्तानो! उठो, अवसर निकल जाये नहीं,
देखो, बड़ों की बात जग में बिगड़ने पावे नहीं।
जग जानले कि न आर्य केवल नाम के हो आर्य हैं,
वे नाम के अनुरूप ही करते सदा शुभ कार्य हैं,
ऐसा करो जिसमें तुम्हारे देश का उद्धार हो,
जर्जर तुम्हारी जाति का बेड़ा विपद से पार हो।
ऐसा न हो जो अन्त अन्त में, चर्चा करें ऐसी सभी—
थी एक हिन्दू नाम की भी निन्द्य जाति यहाँ कभी।
समझो न भारत-भक्ति केवल भूमि के ही प्रेम को,
चाहो सदा निज देशवासी बन्धुओं के क्षेम को।
यों तो सभी जड़ जन्तु भी स्वस्थान के अति भक्त हैं,
कृमि, कीट, खग, मृग, मीन भी हमसे अधिक अनुरक्त हैं।।

बुढ़ापा ऐसे बितायें

– प्रो. शामलाल कौशल

केवल निराशावादी लोग ही 'जो जा के न आये जवानी देखी और जो आ के ना जाये बुढ़ापा देखा' कहते हैं। वरना बुढ़ापा किसी भी तरह जीवन के अन्य भागों से कम लुत्फ वाला नहीं है। कई लोगों को सिर के बाल सफेद होते ही या फिर बाल झड़ने का सिलसिला शुरु होते ही या फिर ऐनक लगते ही चिन्ता हो जाती है कि भई, लो जिंदगी का आखिरी पड़ाव बुढ़ापा शुरु हो गया है। हम जानते हैं कि सुबह हुई है तो शाम भी होगी ही, बचपन, लड़कपन, जवानी आई है तो बुढ़ापा भी अवश्य ही आयेगा। जब ना टाले जाने की जीवन की अवस्था का सामना करना ही है तो फिर क्यों चिन्ता, फिक्र तथा डर से करें। इसका स्वागत करना चाहिये। हमें तो इस बात के लिये परमात्मा का दिल से धन्यवाद ही करना चाहिये कि उसने हमें बुढ़ापा आने तक जीवन दान दिया। वरना कई लोगों का तो बुढ़ापे से पहले ही राम नाम सत् हो जाता है। अब भी हमारे समाज में और दूसरे कई देशों के मुकाबले में बुजुर्गों की ज्यादा इज़्ज़त है। आज भी बुजुर्गों के पांव छूकर उनसे आर्शीवाद लिये जाने की परम्परा कायम है। आज भी बड़े बूढ़ों की शर्म-लिहाज़ कुछ हद तक होती है। रेलगाड़ियों/बसों में सहानुभूतिपूर्वक लोग बुजुर्गों को बैठने के लिये सीट दे ही देते हैं। देश के कुछ भागों में अभी भी औरत बुजुर्गों के सामने सिर पर पल्लू रख लेती हैं या फिर घूंघट निकाल लेती है। बेशक पहले के मुकाबले में बुजुर्गों का मान सम्मान घट रहा है, लेकिन अभी शून्य नहीं हुआ, यही ही उनके लिये आशा की किरण है।

मेरे प्यारो! बुढ़ापे से कतई डरने या घबराने की जरूरत नहीं है। जिस तरह हमने कोई काम करना है तो पहले ही उसकी योजना बना लेते हैं, जीव जन्तु, पक्षी आदि भी बरसात का मौसम आने से पहले अपने रहने तथा भोजन आदि का इन्तज़ाम कर लेते हैं। और हम तो इनसान हैं, बुढ़ापा आने से पहले ही इसे बिना किसी कठिनाई के बिताने के लिये योजना क्यों नहीं बना लेते? जिंदगी का यह दौर आते आते आदमी कुल मिलाकर स्याना हो जाता है। उसके पास उम्र भर के अच्छे-बुरे अनुभवों का खज़ाना होता है। किसी ना किसी प्रकार की सहायता करने के लिये उसका परिवार, बेटे, बहुएं, पोते, पोतियां-बेटियां, दामाद, सम्बन्धी, दोहते, दोहतियां वगैरह होते हैं जो कि जरूरत पड़ने पर कुछ ना कुछ, सहायता करने के लिये तत्पर रहते हैं। बुढ़ापा आने पर आदमी के पास बचाया हुआ कुछ ना कुछ पैसा, पेंशन, जमीन, जायदाद, बीमा की रकम वगैरह होते हैं जिनका इस्तेमाल इस तरह करना चाहिये कि किसी पर किसी प्रकार की निर्भरता ना रहे। जब आर्थिक निर्भरता नहीं रहेगी तो घर/परिवार तथा रिश्तेदारी में सम्मान/आत्मसम्मान बना रहता है। बुढ़ापा आने तक इतनी समझ तो आदमी में आ ही जानी चाहिये कि वह घर के मामलों में हस्तक्षेपटोका टोकी तथा राय देने से परहेज करें क्योंकि सभी अपने आपको इतना समझदार समझते हैं कि किसी प्रकार की राय दिये जाने से घृणा करते हैं। बुढ़ापे में क्योंकि घर गृहस्थी चलाने की जिम्मेवारी किसी और पर होती है, अतः जहाँ तक संभव हो घर में अतिथियों को बुलाने के बदले में उन्हें बाहर ही निपटा देना चाहिये। आदमी को चाहिये कि अगर घर वाले किसी काम को करने के लिये कहें तो उसे हंसते चेहरे से निपटाने की कोशिश करते हुए अपनी उपयोगिता कायम रखनी चाहिये। अपना फालतू समय काटने के लिये पास-पड़ोस के किसी पार्क या लायब्रेरी में मित्र मंडली बनानी चाहिये। इससे हम उम्र बुर्जुगों के साथ विचार विमर्श करने तथा कुछ सीखने का मौका मिलता है। बुढ़ापा सुखमय तरीके से बांटने का सर्वोत्तम तरीका अपने आप को शारीरिक तथा मानसिक तौर पर तंदरुस्त रखने से है। सुबह/शाम नियमित तौर पर सैर, व्यायाम, प्राणायाम तथा योगा करना चाहिये ताकि विभिन्न प्रकार की आधियों तथा व्याधियों से बचा जा सके। शरीर को होने वाली बीमारियाँ जैसे दमा, खांसी, आँखों से कम दिखाई देना, घुटनों/जोड़ों का दर्द, कब्ज़,

गद्दद, ब्लड प्रैशर, दिल की बीमारी, शूगर आदि के समाधान के लिये सतर्क तथा प्रयत्नशील रहना चाहिये। हंसी, खुशी के किसी भी मौके को हाथ से जाने नहीं देना चाहिये। जहाँ तक हो सके खान, पान, क्रोध, नमक, चीनी तथा तनाव पर नियंत्रण रखना चाहिये। याद रखें आप जब तक तंदरुस्त हैं, आपके पास कुछ पैसा है, दूसरों के लिये आप उपयोगी हैं, दूसरों को आपसे कोई परेशानी नहीं होती। आपकी हर बात ध्यान से सुनी जायेगी और आपका बुढ़ापा सुखमय होगा। बुढ़ापा आने पर निराशा/हताशा को अपने पास ना आने दें। राजकपूर ने अपनी पिक्चर 'मेरा नाम जोकर' के खत्म होने पर कहा था 'मत जाइये, अभी पिक्चर बाकी है' ठीक उसी तरह बुढ़ापा आने के बावजूद भी यह कभी नहीं सोचना चाहिये कि सब कुछ खत्म हो गया है। हिम्मत, हौसला, उत्साह, जोश, चुस्ती बरकरार रखिये। इन्हींबातों के सहारे तो कुछ दिन पहले अखबार में पढ़ने को मिला कि 108 साल के पुरुष तथा 91साल की औरत ने विवाह कर लिया। तभी तो बुढ़ापा आने के बावजूद भी फिल्म स्टार देवानंद को सदाबहार हीरो कहते थे। बुजुर्ग होने के बावजूद भी अमिताभ बच्चन जिस तरह सफलता तथा सम्मान की ऊँचाईयों को छू रहे हैं उनसे प्रेरणा ली जा सकती है।

हे राम

(आर्य समाज की दृष्टि से देखो 'श्रीराम')

– अजय चौधरी

रावण असुर का वध कर, तुमने जग कल्याण किया
सहमी सहमी मानवता को तुमने नूतन त्राण दिया
मृत प्राय संस्कृति को तुमने, नव जागृति का प्राण दिया
वेद पथिक बन वैदिक पथ पर, तुमने सहर्ष प्रयाण किया
सीता पति हे रघुकुल भूषण, कोटि कोटि है तुम्हें प्रणाम
हे राम......

सत्य धर्म के रक्षक तुम थे, तुम भारतीयता के अभिमान
दिव्य सुकर्मों से तुमने नव, सतत बढ़ाया माँ का मान
ले आये तुम हे युग मानव, वसुन्धरा पर नया विहान
गूंज उठा हिमगिरी शिखरों से पुनः नया मंगलमय गान
हुए निरत जग कल्याणों यें यजु, अथर्व तथा ऋक, साम
हे राम....

मर्यादित आचरण तुम्हारे, जागृत किया अमर बलिदान
त्याग भावना की दृढ़ता ने बना दिया व्यक्ति महान्
सत्य सनातन धर्म सुवैदिक की तुम बने अलौकिक शान
दिग्विजय पुरुषोत्तम उत्तम, तुम थे भारत के भगवान
हे राम....
दूर किया तुमने निर्भय हो, आर्यसीता का दारूण क्रन्दन
भरा धरा के उर में तुमने, नव्य चेतना का स्पन्दन
होने लगा प्र धरती पर, मानवता का अभिनन्दन

धर्म अर्थ का काम मोक्ष का किया तुमने अभिनन्दन
शक्ति स्रोत व ज्योति पुंज, बन गये हमारे नगर ग्राम
हे मर्यादा पुरुषोत्तम राम

Auth. Distributor
Sleepwell
Sleepwell

परदे ही परदे गददे ही गददे

Singhal Furnishing

(Auth. Sleepwell Gallery)

Deals in : All kinds of S/W Mattress, Cushions, Pillows, Flooring Carpets, Curtains, Sofa's Clothes, Sofa Materials & Blinds.

J.K. Singhal
S.K. Singhal

Near Aggarwal Dharmshala, Nathu Colony, Chawla Colony, Ballabgarh-121004
Ph. : (O) 0129-2244905, J.K. : 9911706903, S.K. 9891305902

परोपकार

– स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

- सेवा कोई व्यापार नहीं है कि वहीं पर की जाए जहाँ कुछ वापस मिलने की आशा हो। यह तो एक सुंदर भावना है जो शुद्ध हृदय से की जाती है।
- आप केवल अपने आनंद के लिए ही नहीं जन्मे हैं, दूसरों के आनंद का भी ध्यान रखें। एक आनंदित जीवन जीने के लिए शुभ कामनाएं।
- दूसरों को सुख देने के लिए अपने छोटे-छोटे दुःखों को भूल जाएं। यही मनुष्यता है। पशु तो अज्ञानी हैं, वे तो नहीं कर सकते, हम तो...।
- संसार में दो प्रकार के व्यक्ति हैं, लेनेवाले और देनेवाले। हो सकता है लेने वाले खाते अच्छा हों पर देने वाले सोते अच्छा हैं। अच्छा सोएं।
- किसी और ने हमारे लिए पेड़ लगाए थे, जिनकी छाया में हमने सुख लिया। अब हम भी दूसरों के लिए पेड़ लगाएं, जो उनकी छाया में सुख लेंगे।
- पिछला दीप किसी ओर के जीवन को प्रकाशित करके बुझ गया। पुनः दीप जलाने के लिए अब आपकी बारी है। दूसरों के लिए दीप जलाएं।
- यदि आप किसी मूल्यवान जस्तु का त्याग करते हैं, तो आप इसे खो नहीं रहे बल्कि किसी दूसरे को इसका लाभ लेने का अवसर दे रहे हैं।
- आपकी निष्कामता की यही परीक्षा तब होती है जब यह पता चले कि आप उन लोगों के लिये क्या करते हैं, जो आपके लिये कुछ भी नहीं कर सकते।
- जो हम प्राप्त करते हैं, उससे हमारा जीवन बनता है। जो हम देते हैं, उससे दूसरों का जीवन बनता है। दोनों (अपने और दूसरे) का जीवन बनाएं।
- यदि आप दूसरों के रास्ते से कील, काँटे, पत्थर आदि साफ कर देते हैं तो आपका रास्ता तो अपने आप ही साफ हो जाएगा। दूसरों का रास्ता साफ करें।
- कुछ प्राप्त करने का नियम—लेने से पहले कुछ देना। इसलिए पहले कुछ देने की बात सोचें, फिर लेने की। और लेकर उसको फिर दूसरों को दें।
- यदि आप दूसरों को सुख देंगे, तो भगवान जी आपके दुःख तो पहले ही दूर कर देंगे।
- माली की तरह जिएं, जिसके प्रयत्न की खुशबू अर्थात् खिलते हुए फूल की खुशबू संसार में फैलती है। फूलों की खुशबू हवा में माली की खुशबू संसार में।
- क्या हम दूसरों को सुख दे रहे हैं? यदि इस प्रश्न का उत्तर है हाँ, तो इसका अर्थ है कि हम जीवित हैं, अन्यथा जीवन व्यर्थ ही है।
- दूसरों को दुःख देना वृक्ष काटने के समान सरल है। दूसरों को सुख देना वृक्ष लगाने के समान कठिन है। दूसरों को दुःख न देकर सुख दें।
- न हम कुछ लेकर संसार में आए थे और न ही कुछ लेकर जा पाएंगे तो क्या हम अपनी आय का पाँच प्रतिशत भी सत-कर्मों में नहीं लगा सकते? अरे भाई, कुछ तो लगाओ।
- किसी भी व्यक्ति की खुशी का कारण बनें, हिस्सा नहीं। किसी भी व्यक्ति के दुःख का हिस्सा बनें, कारण नहीं। आपका जीवन सफल हो जाएगा।
- व्यवहार राक्षसों का—"सारा मैं खाऊँगा, तुम्हें कुछ नहीं दूंगा। मनुष्यों का—"मैं भी खाऊं, तुम भी खाओ।" देवताओं का—"मुझे कम मिले, तुम अधिक ले लो।"
- अपने सुख में दूसरों को भागीदार बनाएं। दूसरों के दुःख में हम भागीदार बनें। यही मानवता है। केवल स्वार्थसिद्धि तो पशुता है।
- किसी को दुख देने में आपको सुख मिल सकता है परन्तु किसी को सुख देने में आपको दुख नहीं मिलेगा। इसलिए सदा सबको सुख ही दें।
- हर वर्ष गर्मी से हजारों पक्षी प्यासे मर जाते हैं। पक्षियों पर दया करके कृपया अपने घर की छत पर पानी का बर्तन अवश्य रखें।
- अपने पड़ोसियों के साथ बांटकर खाएं, अकेले नहीं। अकेला खाने वाला पापी है।
- मेरे कारण किसी की आँख में आँसू-मेरा जीवन निष्फल। मेरे लिए किसी की आँख में आँसू—मेरा जीवन सफल। अपना जीवन सफल बनाएं।

●

महात्मा कन्हैयालाल जी महता जीवन वृतान्त

तपोयुक्त, त्यागी, समाजसेवी महामय महता जी का जन्म 15 जुलाई पाकिस्तान के मैसली गाँव में जमीदार पिता सम्पन्न धनी-मानी। जन्म के एक वर्ष के भीतर माता का निधन हो गया। लालन-पालन चाची एवं बड़ी बहन द्वारा हुआ। पढ़ने की आयु से लगातार होस्टल में रहे। बी.ए. में पढ़ रहे थे उस वक्त देश का विभाजन हुआ। दिसम्बर तक पाकिस्तान में रहकर मिलिटरी के साथ जान पर खेल कर वहाँ अपहृत की गई महिलाओं और बच्चों को निकालते रहे। 1951 दिसम्बर से फरीदाबाद के सरकारी विद्यालय में नियुक्त हुए।

1969 में प्रथम दयानन्द स्कूल और दयानन्द महिला महाविद्यालय की स्थापना की। धीरे-धीरे शाखाएं बढ़ाई और 22 तक फिर ब्रांच शाखाएं दूसरी शाखाओं से मिला दी गई। अब 17 स्कूल और एक महिला महाविद्यालय है। शाखाएं पूरे फरीदाबाद क्षेत्र में फैली हैं। 1951 से ही फरीदाबाद के आर्य समाज की गतिविधियों के सिरमोर रहे। पूरे क्षेत्र के ये अगुआ थे। किसी हिन्दू कन्या का अपहरण हो या किसी विधवा की कोई समस्या हो, किसी आर्य-समाज में खेंचतान हो या नया भवन बनवाना हो ये सभी के मुखिया बनकर नेतृत्व करतें रहे। अजमेर की आर्य समाज की शताब्दी पूर्व हो या टंकारा का ऋषि बोधोत्सव हर स्थान पर उपस्थित होकर तन, मन, धन से पूरी सहायता करने में सदैव अग्रणी रहे। गुरुकुल हसनपुर हो या बहीन का कान्हा गोशाला। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ हो या गदपुरी का आर्य समाज हर प्रकार से इन सबकी सहायता करना ये अपना कर्त्तव्य समझते थे। अपने परिवार की ओर ध्यान न देते हुए इन्होंने सदैव आर्य समाज और इन स्कूलों और महिला कालेज को ही अपना घर समझा। गृहस्थ का बोझ अपनी पत्नी डा. विमल महता पर छोड़ रखा।

आर्य प्रतिनिधि समाज रोहतक के कोषाध्यक्ष, उपप्रधान के रूप में भी इन्होंने सराहनीय कार्य किया। केवल आर्य समाज के ही नहीं वरन् किसी भी प्रकार के जरूरतमंद व्यक्ति को इन्होंने कभी निराश नहीं किया। जिसने जिस प्रकार की सहायता की माँग की इन्होंने पूर्ण करने का प्रयास किया। आर्य जगत में केन्द्रीय सभा के प्रधान के रूप में इन्होंने नए प्राण फूकें।

आर्य वीर दल के संरक्षक के रूप में अभूतपूर्व योग दिया। दो बार प्रदेश स्तर के सम्मेलन कराकर फरीदाबाद में उज्ज्वल उदाहरण प्रस्तुत किया। मेवात मंडल, वेद-प्रचार मण्डल आदि संस्थाएं इन्हें अत्यन्त प्रिय थीं।

फरीदाबाद क्षेत्र की अनेक आर्य-समाजों उन्हें समय-समय पर सम्मानित किया। पितृवत स्नेह एवम् आशीष देकर महता साहब ने सभी को कृतार्थ किया। फरीदाबाद के किसी भी दानी ने इन्हें कभी न नहीं की किसी के पास भी जाते यथा योग्य सहायता देते यही कारण है कि श्री महता जी आज एक अरब की सम्पत्ति आर्य समाज व शिक्षण संस्थान के रूप में छोड़ गये हैं जो कि अपने आप में एक उत्कृष्ट उदाहरण है। धन की दृष्टि से सारा सहयोग स्थानीय व्यवसायियों, उद्योगपतियों एवम् उनके साथियों को जाता है।

दयानन्द महिला विद्यालय एवं दयानन्द स्कूलों के संस्थापक के रूप में नागरिक अभिनन्दन 15.1.193 को हरियाणा सरकार के गृहमन्त्री श्री के.एल. पोसवाल की अध्यक्षता में किया गया।

फरीदाबाद के विभिन्न क्लबों, लॉयेंस, रोटरी ने अब सोशल वर्कर के रूप में सम्मानित किया गया। लोकल वैलफेयर सोसायटी ने भी अपनी प्रतिष्ठा का भागीदार बनाया। समयसमय पर डी.सी. तथा ए.डी.सी. ने भी प्रतिष्ठा शिक्षक उपाधि दी।

परिवार -

तीन सुशिक्षत बच्चे
बेटा आनन्द महता इन्जीनियर तथा अपना व्यवसाय
बड़ी बेटी-सुमन कँवर, पीएच.डी. कैमेस्ट्री
छाटी बेटी-अनिता कान्त-डाक्टर एम.डी.
दोनों दामाद-सुयोग्य एवम् सम्पन्न
कुलवधू-सुशिक्षित तथा सम्पन्न।

●

व्रत और उपवास

- श्री धर्मपाल आर्य

मनुष्य को अपना चरित्र उत्तम बनाने, उसका शरीर स्वस्थ रहे औरउसका आत्मिक व मानसिक बल बढ़े इसके लिए क्या साधन बनाना चाहिए? हमारे ऋषि मुनियों ने इसके लिए एक उत्तम साधन बताया है व्रत और उपवास। व्रत कहते है किसी नियम को अपने जीवन में धारण कराना जैसे सत्य बोलना, चोरी न करना, अहिंसा का पालन करना। अर्थात दोषों को त्यागना तथा गुणों को ग्रहण करना व्रत है। और व्रतों को ग्रहण करने से उन पर अडिग रहकर आचरण करने से मनुष्य का मनोबल बढ़ता है और वह चरित्रवान कहलाता है।

इसी प्रकार समय समय पर निराहार रहना। दोनो समय या एक समय भोजन न करना उपवास कहलाता ह। यह मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी है। इससे कई रोगों से छुटकारा मिलता है। पेट के कोई रोग नहीं होते और यदि कोई हो भी जाए तो वह बिना औषध के भाग जाता है। परन्तु आजकल इन दोनों का रूप बिगाड़ कर रख दिया है। व्रत और उपवास को एक ही रूप मान लिया गया है। मंगलवार आया तो कहने लगे कि आज हनुमान जी का व्रत है। यह हनुमान जी का व्रत कैसे हुआ। व्रत तो यह है कि हनुमान जी की विद्वता, ब्रह्मचर्य, शास्त्रों का ज्ञान आदि गुणों को धारण करना। कुछ समय भूखा रहना तो उनका व्रत न हुआ। हनुमान जी पूर्णतया शाकाहारी थे। वे कोई मादक द्रव्य या तम्बाकू का सेवन नहीं करते थे। उनके पद चिह्नों पर चलें तो ठीक, नहीं तो सब बेकार।

इस प्रकार कृष्ण जन्माष्टमी के दिन निराहार रहने का नाम व्रत है। पूछो तो कहते हैं कि कृष्ण जी का जन्म हुआ था इसलिए व्रत रखते हैं। क्या अजीब बात है यदि घर में बेटे, पोते का ज्नम हुआ तो क्या खूब लम्बी चौड़ी पार्टियां रखते हैं। सारा दिन खूब खाना पीना चलता है। सारा दिन खूब धमाका होता है। फिर कृष्ण जन्म पर भूखे क्यों? कहते हैं कि उस दिन भी तो बरफी, पेड़े आदि खाते हैं। दिन भर भूखे रहकर देर रात को भोजन करना बुद्धिमता नहीं। यह तो कई रोगों को निमंत्रण देना है। अगले दिन अपचन हो जाता है। पेट की कई बिमारियाँ हो जाती हैं। जन्माष्टमी का व्रत तो तब है कि जो उपदेश कृष्ण जी महाराज ने गीता के माध्यम से हमें दिए उसको हम अमने जीवन में धारण करें, वीरोचित औरन्यायसंगत कर्म करें तो ठीक अन्यथा कुछ भी नहीं। इसी प्रकार और जो भी वर्ष भर में अनेकों व्रत रखते हैं जो कि व्रत की भावना के विपरीत है।

उपवास और व्रत का अर्थ गढ़बड़ा दिया है। उपवास का प्रकार तो यह है कि प्रातःकालीन को फलों का थोड़ा सा रस पी लें। अगले दिन सादा व हल्का सा भोजन करें। यह तो उपवास हुआ और स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद भी।

व्रत में कोई कार्य पूर्ण करने की धारणा कोई स्वाध्याय करना, प्रभु भक्ति करना जीवनोपयोगी गुणों को धारण करना आदि आ जाते हैं। यही उत्तम प्रकार का उपवास व व्रत है।

खान पान कैसा हो?

कभी-कभी उपवास करने से स्वास्थ्य बनाने में सहायता मिलती है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। पर हमें खाना क्या चाहिए जिससे हमारा स्वास्थ्य निरोग रहे। परमात्मा ने मनुष्य को शाकाहारी उत्पन्न किया है। उसके मुख दांत, जबड़े, नाखून आदि सब अंग दर्शाते हैं कि मनुष्य का प्राकृतिक भोजन शाकाहर है। परन्तु बहुत से मनुष्य अज्ञानतावश और जिह्वा के स्वाद के कारणमांसाहार करने लग गए हैं। जो कि नितान्त हानिकारक व अनेकों रोगों को उत्पन्न करने वाला है।

इस सृष्टि में दो प्रकार के प्राणी है। एक शाकारी व दूसरे मांसाहारी। दोनों प्रकार के प्राणियों की रचना भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। जो मांसाहारी हैं उनके दांत व नाखून लम्बे व नुकीले हैं। उनकी आँख चमकीली व अंधेरे में देख सकने में सामर्थ होती है। वे अपने शिकार पर झपटते हैं और दबोच कर उन्हें कच्चा चबाना शुरु कर देते हैं। इसके विपरीत शाकाहारियों के मुख, दांत, जबड़े, नाखून आदि अंग मांसाहारियों से भिन्न हैं। शकाहारी पशु भूखा मर जाएगा परन्तु मांस नहीं खाएगा।

मनुष्य ने अपना खान पान सब बिगाड़ के रख लिया है। दूध, शाक और फलों को छोड़ उसने मछली, मांस, मुर्गा, अंडा आदि पर बल देना आरंभ कर दिया। मनुष्य समझता है कि मांस खाने से उसका शारीरिक बल बढ़ता है परन्तु यह मिथ्या है। जिस प्राणी का जो भोजन है उसी से शरीर हृष्ट पुष्ट होता है। दुनियां की प्रतियोगिताओं में बहुधा शाकाहरी मांसाहारियों पर विजय पाते हैं। मांसाहारियों के पांव शीघ्र उखड़ जाते हैं। उनके शरीर में शीघ्र थकावट आ जाती है। शरीर में अनेकों रोग उत्पन्न होने लग जाते हैं जो बहुत ही भयानक होते हैं।

मांसाहार से मनुष्य का स्वभाव भी बदल जाता है। मानसिक वृत्तियाँ उत्पन्न होती है। काम क्रोध बढ़ जाते हैं। परस्पर स्नेह की भावना नहीं रहती। मन की शान्तिनष्ट होकर लड़ाई-झगड़े की प्रवृत्ति बन जाती है। छीना झपटी व अनाधिकार चेष्टा के भाव उत्पन्न हो जाते हैं और सारा सामाजिक जीवन नष्ट हो जाता है।

शाकाहारी शान्ति प्रद होते हैं। काम-क्रोध को दबा सकने का सामर्थ्य उनमें होता है। वे लड़ाई झगड़े से दूर रहकर प्रेम पूर्वक रहते हैं। इस प्रकार उनका सारा जीवन आनन्दमय बना रहता है।

मादक द्रव्यों, शराब आदि का सेवन भी नहीं करना चाहिए। भांग को शिवजी का पेय कहकर लोग मिथ्या भावों से ग्रस्त हो जाते हैं और उन्हें सिवा हानि के कुछ नहीं मिलता। मादक द्रव्यों से बुद्धि मलीन हो जाती है। अनेक रोग शरीर में लग जाते हैं और मदिरापान करने वाले जो बुरी संगत में पड़ पहले तो सुख का अनुभव करते हैं परन्तु बाद में मदिरा ही उनको पीने लग जाती है और बुढ़ापे से पूर्व ही वे लोग अनेक कष्ट सहते इस संसार से विदा हो जाते हैं। इस प्रकार जहाँ शारीरिक हानि होती है वहीं आर्थिक दशा भी बिगड़ जाती है। उनके बच्चों को भर पेट भोजन नहीं मिलता। शरीर को रोगों से छुटकारा दिलाने के लिए न जाने कितना रूपया खर्च हो जाता है। इस प्रकार व्यक्ति की मान मर्यादा खत्म हो जाती है।

हमें चाहिए कि अंडे, मांस, मछली और मादक द्रव्यों को छोड़कर मनुष्योचित सादा भोजन जिसमें दूध, घी, दही, मलाई, फल, अनाज, शाक, सब्जियों, सूखे मेवे इत्यादि का सेवन करें। सात्विक वृत्ति बनावे व आनन्दमय जीवन व्यतीत करें। ●

महर्षि दयानन्द सेवाधाम ट्रस्ट, सैक्टर 7, फरीदाबाद

सर्वे सन्तु निरामया:

प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र महर्षि दयानन्द सेवा धाम ट्रस्ट (पंजीकृत) आर्य समाज सैक्टर 7ए, फरीदाबाद (हरि.) चिकित्सालय में सभी प्रकार की बीमारियों का इलाज पंच तत्वों (मिट्टी, पानी, धूप, हवा, आकाश) के माध्यम से किया जाता है। किसी प्रकार की दवाई का प्रयोग नहीं किया जाता है।

आर्य समाज की प्रमुख गतिविधियों में से एक प्राकृतिक चिकित्सा लगभग दस वर्षों से निरन्तर ही समाज के लोगों को निरोगी करती चली आ रही है।

महिला तथा पुरुषों के इलाज की अलग-अलग व्यवस्था है। सक्षम तथा कुशल स्टाफ समाज की सेवा में कार्यरत हैं।

निराश न हों तथा जीर्ण रोगों के इलाज के लिए सम्पर्क करें।

नोट : साढे तीन वर्षीय एन.डी.डी.वाई. डिप्लोमा कोर्स के लिए सम्पर्क करें।

- चिकित्सा अधिकारी डा. विजेन्द्र सिंह (सागर जी), दूरभाष : 9210291284

अंगुलीमाल का हृदय परिवर्तन

बुद्ध घूम रहे थे भारत में। भ्रमण करते हुग मगध में पहुँचे तो एक नगरी के बाहर डेरा डालकर बैठ गये। लोग उनके दर्शनों को आये। बुद्ध ने पूछा, 'क्या हाल है?' किसी ने कहा, 'मेरा लड़का मारा गया।'

किसी ने कहा, 'पति मारा गया।'

किसी ने कहा, 'भाई मारा गया।'

बुद्ध ने आश्चर्य से पूदा, 'क्या हो गया है तुम सबको? क्या कोई युद्ध यहाँ पर हुआ? क्या राजा ने अत्याचार आरम्भ कर दिया?'

लोगों ने कहा, 'नहीं महाराज !राजा अच्छे हैं। युद्ध भी नहीं हुआ, परन्तु यहां एक डाकू रहता है अंगुलीमाल। वह प्रतिदिन एक नये व्यक्ति को मारकर उसकी अंगुली काट लेता है। जिस देवी की वह पूजा करता है, वह उसे एक हजार अंगुलियों की माला पहनाना चाहता है। उसे किसी ने कह दिया है कि ऐसी माला पहनाने से बड़ी सिद्धि मिल जाएगी।'

बुद्ध ने पूछा, 'कहां रहता है वह?'

लोगों ने बताया, 'नगर के दूसरी ओर विशाल वन में।'

बुद्ध बोले, 'मैं उसके पास जाऊंगा।'

लोगों ने अशांत होकर कहा, 'उसके पास मत जाइए महाराज।'

परन्तु बुद्ध मानने वाले नहीं थे। उठे और चल पड़े।

लोगों ने कहा, 'उसे राजा के सिपाही भी नहीं हरा सके। आप बिना हथियार के क्या करेंगे?'

बुद्ध बोले, 'मेरे पास ऐसा हथियार है, जिसके सम्मुख और कोई हथियार नहीं चलता' और वे नगर को पार करके जंगल में पहुंचे।

सुनसान और वीरान वन था व अत्यन्त भयानक। कहीं कोई व्यक्ति नहीं। कोई पशु नहीं। बुद्ध चलते गये। पर्याप्त आगे जाकर एक बूढ़ी स्त्री मिली। बुद्ध ने पूछा, 'मां! क्या तुम जानती हो कि अंगुलीमाल डाकू इस वन में कहां रहता है?'

बूढ़ी स्त्री ने कहा, 'जानती हूं पुत्र। परन्तु आगे मत जा, वापस चला जा यहां से। अंगुलीमाल मनुष्य नहीं, राक्षस है। वह तुम्हारा वध किये बिना मानेगा नहीं।'

बुद्ध हंसते हुए बोले, 'ऐसी क्या बात है मां। वह मेरी हत्या क्यों करेगा?'

बूढ़ी स्त्री ने कहा, 'तू जानता नहीं है बेटा। एक सहस्र अंगुलियों को वह एकत्रित करना चाहता था। आज अन्तिम रात्रि है। आज उसे देवी की पूजा करनी है, उसे माला पहनानी है और माला में एक अंगुली अभी कम है। आज प्रातःकाल से ही किसी व्यक्ति का खोजता फिरता है। मैं उसकी मां हूं। मैंने पूछा, यदि रात्रि तक कोई व्यक्ति न मिला तो क्या करेगा तू? वह बोला कि सांयकाल तक यदि कोई व्यक्ति न मिला तो तुझी को मार डालूंगा, तेरी अंगुली काटकर माला में पिरो दूंगा। मैं ऐसी डरी कि सांयकाल होने से पूर्व ही घर छोड़कर भाग उठी। अपनी मां को नहीं छोड़ता वह, तो तुझे कैसे छोड़ेगा? वापस चला जा यहां से! वह पहले पागल था, आज पूर्ण पागल हो गया है।'

बुद्ध बोले, 'मुझे मरने का डर नहीं है। मैं उसे मिलूंगा अवश्य। तुम बताओ वह रहता कहां है?'

बूढ़ी स्त्री ने कहा, 'वृक्षों के काले झुरमुट के उस पार उसका मकान है। उसमें मिलेगा वह, परन्तु मैं अब भी कहती हूं न जा।'

बुद्ध हंसते हुए आगे बढ़े। झुरमुट के उस पार चले गये। सामने मकान दृष्टिगोचर हुआ। उसके समीप जाकर बोले, 'कोई है?'

अन्दर से हुंकार की आवाज आई। थोड़ी देर में अंगुलीमाल बाहर आया, हाथ में तीक्ष्ण तलवार लिये। द्वार के बाहर आकर बोला, 'कौन हो तुम?'

बुद्ध बोले, 'क्या तुम्हीं अंगुलीमाल हो?'

डाकू ने चिल्लाकर कहा, 'हां, तुम्हारी मृत्यु तुम्हें यहां ले आई है, मैं तुम्हारी गर्दन काटूंगा।'

बुद्ध हंसते हुए बोल, 'मैं गर्दन ही कटवाने आया हूं। इसलिए आया हूं कि तुम्हारी पूजा पूरी हो जाए। आगे बढ़ो। काटो यह गर्दन।' और उन्होंने गर्दन झुका दी। अंगुलीमाल प्रसन्नता से चिल्लाकर आगे बढ़ा, तलवार उठाकर। परन्तु यह क्या। तलवार वाला हाथ जहां का तहां रुक गया। कांपते हुए उसने कहा, 'यह क्या हो गया मुझको? कौन हो तुम?'

बुद्ध बोले, 'मैं हूं गौतम।'

डाकू ने तलवार फेंक दी। आश्चर्य से बोला, 'आप ही क्या गौतम बुद्ध हो? आप ही क्या मरने के लिए आए हो?'

बुद्ध ने कहा, 'हां, मैं ही गौतम हूं। मैं मरने के लिए आया हूं।'

अंगुलीमाल कांपती हुई आंसू भरी आवाज में बोला, 'मुझे माफ कर दो गौतम। मैंने बहुत पाप किये हैं। मेरे पापों का कोईप्रायश्चित नहीं।'

गौतम आगे बढ़े। उसके माथे को छूकर बोले, "घबराओ नहीं, मैंने तुम्हारे पाप नष्ट कर दिये। मैंने तुम्हारे मन को बदल दिया।'

यही अंगुलीमाल बाद में भिक्षु बना। लंका में जाकर बौद्ध धर्म का प्रचार उसने किया। (आर्य सन्देश से साभार) ●

वीर भगत सिंह

- धर्मेन्द्र जिज्ञासु

भगतसिंह का जन्म व बचपन

इसी क्रान्तिकारी परिवार में पंजाब के गाँव बंगा में (अब लालयपुर पाकिस्तान) विद्यावती और सरदार किशन सिंह के घर दिनाँक 28 सितम्बर, 1907 (13 आश्विन संवत् 1964) को प्रातः 9 बजे भगतसिंह का जन्म हुआ। इन्हीं दिनों उनके पिता सरदार किशन सिंह तथा चाचा अजीत सिंह व स्वर्ण सिंह जी के जेल से रिहा होने की खबर घर पहुँची। उनकी दादी ने खुश होकर उन्हें (भागांवाला) भगतसिंह नाम दिया। बचपन में उनकी परवरिश दादा जी की छत्रछाया में हुई। भगतसिंह के मन पर बचपन से ही क्रांतिकारी विचारों तथा अंग्रेजी अत्याचारों के चित्र अंकित होने लगे। भगतसिंह ने चौथी कक्षा गाँव के स्कूल से पास की। इस समय तक उन्होंने घर में रखी 40 से ज्यादा पुस्तकें पढ़ ली थीं जो उनके चाचा अजीत सिंह व सूफी अम्बाप्रसाद आदि की लिखी हुई थीं।

बेटे हुए बलिदान, पोते कर दिए दान

इनके परिवार पर अंग्रेजों का कहर टूटता ही रहता था। श्री अजीत सिंह आज़ादी की लड़ाई को तेज करने के लिए विदेश चले गए। वहाँ से (ब्राजील) वे सन् 1947 ई. में ही लौट सके परन्तु आज़ादी की पहली ही सुबह (15 अगस्त 1947 ई.) को 4 बजे उन्होंने देश के बंटवारे से दुःखी होकर किसी योगी की भाँति स्वेच्छा से शरीर त्याग दिया। भगतसिंह के दूसरे चाचा स्वर्णसिंह भी अंग्रेजी जुल्मों से मात्र 23 वर्ष की आयु में ही चल बसे। 1916-17 ई. में भगतसिंह को लाहौर के डी.ए.वी. स्कूल (दयानन्द ऐंग्लो वैदिक स्कूल) में दाखिल कराया गया। इसी समय भगतसिंह व उनके बड़े भाई जगतसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार पं. लोकनाथ तर्कवाचस्पति जी ने कराया। भगतसिंह के दादा ने दोनों पोतों को बांहों में भरकर संकल्प किया, "मैं अपने दोनों वंशधरों को इस यज्ञवेदी पर खड़े होकर देश के लिए दान करता हूँ।"

शांति नहीं क्रांति

13 अप्रल सन् 1919 ई. को अमृतसर के जलियाँवाला बाग में सभा हो रही थी। जनरल डायर ने निहत्थे लोगों पर गोली चलवाई तथा सैंकड़ों लोग मारे गए। सन् 1920 ई. में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के दौरान अन्य छात्रों की तरह भगतसिंह ने भी स्कूल छोड़ दिया। बाद में उन्होंने लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित नेशनल कॉलेज में दाखिला लिया। इस कॉलेज का उद्देश्य ही नौजवानों को आज़ादी का सिपाही बनाना था। फरवरी 1922 ई. में गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन वापस ले लिया। भगतसिंह इसी समय से गांधी जी की विचारधारा से असहमत हो गए।

शादी नहीं आज़ादी

नेशनल कॉलेज (लाहौर) में भगतसिंह का परिचय सुखदेव, यशपाल व भगवतीचरण आदि साथियों से हुआ। प्रोफेसर जयचन्द्र विद्यालंकार ने इनका परिचय क्रांतिकारी दल से करा दिया। सन् 1923 ई. के उत्तरार्द्ध में परिवार द्वारा भगतसिंह की शादी का प्रयास किया जाने पर उन्होंने घर छोड़ दिया। उन्होंने पिता जी को चिट्ठी लिखकर याद दिलाया कि दादा जी ने उसे देश की आज़ादी के लिए दान कर दिया था। भगतसिंह, प्रो. जयचन्द्र जी का पत्र लेकर कानपुर पहुँचे।

अखबारों में काम, आज़ादी पैग़ाम

कानपुर में आपको गणेश शंकर विद्यार्थी जी ने 'प्रताप' अखबार के संपादन विभाग में काम दे दिया। भगतसिंह वहीं बलवन्त सिंह के नाम से रहते थे। यहीं पर भगतसिंह का परिचय श्री चन्द्रशेखर आज़ाद व रामप्रसाद बिस्मिल से हुआ। विद्यार्थी जी ने बाद में भगतसिंह को गांव शादीपुर के नेशनल स्कूल का मुख्याध्यापक बनाकर भेद दिया। सन् 1926 ई. के शुरु में आपको दादी की बीमारी के बहाने से घर वालों ने लाहौर बुला लिया।

पुलिस ने दशहरा बम कांड के सिलसिले में इन्हें गिरफ्तार कर लिया तथा 60000 रु. की जमानत पर छोड़ा। भगतसिंह इस समय भी क्रांतिकारी दल के कार्यों में व्यस्त रहते थे। सन् 1924 ई. में भगतसिंह दिल्ली में इन्द्र विद्यावाचस्पति जी के अखबार "वीर अर्जुन" में भी कार्य कर चुके थे। सितम्बर 1928 ई. में दिल्ली में क्रांतिकारियों ने हिन्दुस्तान समाजवादी गणतन्त्र सेना (HSAR) की स्थापना कर दी।

HR/FBD/67-2013-2015 dt. 1.1.13
Reg. No. : 42323/84

सेवायाम्

श्रीमान्/श्रीमती _____

आर्य समाज, सैक्टर 7,
फरीदाबाद-121 006

उजली व चमकदार धुलाई

हाथ सुरक्षित

वनस्पति अखाद्य तेलों से निर्मित

निर्माता : **पुनीत उद्योग**

37-E, सैक्टर 6, फरीदाबाद-121006

दूरभाष : 0129-2241467, 4061389

ट्रेड मार्क मालिक :-

उत्तम कैमीकल उद्योग

प्लाट नं. 309, सैक्टर-24, फरीदाबाद पिन - 121006

आर्य वीर विजय, मनोहर लाल द्वारा आर्य वीर दल हरियाणा के लिए 'XYZ OFFSET PRINTERS', 279 सेक्टर 7 मार्किट, फरीदाबाद से छपवाकर, आर्यसमाज मन्दिर, सेक्टर 7, फरीदाबाद-121006 से प्रेषित।